JSL, 11(5), May 2026: 78- 83

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ



रामायण में परिवार, समाज और मानवीय संबंधः सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का अध्ययन

Monalisa Saha

Research Scholar, Sanskrit, Vikrant University, Gwalior

Dr. Sapna Narayan

Supervisor, Vikrant University, Gwalior

सारांश

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण भारतीय साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण आधारभूत कृतियों में से एक है। यह केवल राम के जीवन और उनके आदर्श चरित्र की कथा नहीं है, बल्कि परिवार, समाज, कर्तव्य, त्याग, प्रेम, निष्ठा और मानवीय संबंधों से जुड़े अनेक सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत करने वाला महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। रामायण में पारिवारिक संबंधों को सामाजिक व्यवस्था और नैतिक उत्तरदायित्व से जोड़ा गया है। राम और दशरथ का संबंध पुत्रधर्म तथा पितृभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जबकि राम और भरत के संबंध में भ्रातृप्रेम, त्याग और सत्ता के प्रति अनासक्ति दिखाई देती है। सीता और राम का संबंध वैवाहिक निष्ठा तथा पारस्परिक उत्तरदायित्व के विभिन्न आयामों को सामने लाता है। इसी प्रकार लक्ष्मण, उर्मिला, हनुमान तथा अन्य पात्रों के माध्यम से सेवा, समर्पण, निष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य अभिव्यक्त होते हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य रामायण में परिवार, समाज और मानवीय संबंधों के माध्यम से व्यक्त सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना है। अध्ययन मुख्यतः वाल्मीकि रामायण तथा संबंधित द्वितीयक साहित्य पर आधारित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रामायण में संबंधों को केवल व्यक्तिगत भावनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि कर्तव्य, मर्यादा, त्याग और नैतिक उत्तरदायित्व के व्यापक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

प्रमुख शब्दः रामायण, परिवार, समाज, मानवीय संबंध, सांस्कृतिक मूल्य, नैतिक मूल्य, धर्म, कर्तव्य, त्याग।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

1. परिचय

भारतीय संस्कृति में परिवार को सामाजिक जीवन की मूल इकाई माना गया है। भारतीय महाकाव्य परंपरा में परिवार केवल रक्त संबंधों का समूह नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक विकास का प्रमुख आधार भी है। महर्षि वाल्मीकि की रामायण इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि इसमें पारिवारिक संबंधों, सामाजिक दायित्वों और मानवीय मूल्यों का व्यापक चित्रण मिलता है। ग्रंथ में प्रस्तुत पात्र विभिन्न परिस्थितियों में अपने संबंधों और कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायित्व का प्रदर्शन करते हैं।

रामायण की कथा में परिवार और समाज एक–दूसरे से अलग नहीं दिखाई देते। राजा दशरथ का व्यक्तिगत निर्णय राजकीय व्यवस्था को प्रभावित करता है, राम का वनगमन व्यक्तिगत पारिवारिक घटना होते हुए भी अयोध्या के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को प्रभावित करता है तथा भरत का त्याग राजधर्म और भ्रातृधर्म दोनों से जुड़ जाता है। इस प्रकार व्यक्तिगत संबंधों को व्यापक सामाजिक नैतिकता के साथ जोड़ा गया है।

वर्तमान समय में परिवारों की संरचना और मानवीय संबंधों में अनेक परिवर्तन दिखाई देते हैं। संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों का विस्तार, व्यावसायिक जीवन का दबाव तथा व्यक्तिगत हितों की बढ़ती प्राथमिकता ने पारिवारिक संबंधों को प्रभावित किया है। ऐसी स्थिति में रामायण में प्रस्तुत निष्ठा, त्याग, सहयोग, कर्तव्य और मर्यादा जैसे मूल्यों का अध्ययन सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यह अध्ययन आधुनिक समाज पर किसी एक आदर्श को सीधे लागू करने के बजाय यह समझने का प्रयास करता है कि प्राचीन महाकाव्य ने परिवार और समाज से जुड़े नैतिक मूल्यों को किस प्रकार अभिव्यक्त किया।

1.1 अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- रामायण में परिवार की अवधारणा और उसके विभिन्न संबंधों का अध्ययन करना।
- रामायण में चित्रित सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण करना।
- पारिवारिक एवं मानवीय संबंधों में कर्तव्य, त्याग, निष्ठा और प्रेम की भूमिका को समझना।
- रामायण में व्यक्त सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों की पहचान करना।
- समकालीन संदर्भ में इन मूल्यों की प्रासंगिकता को समझने का प्रयास करना।

2. साहित्य की समीक्षा

पटेल एवं चौहान (2025) ने रामायण महाकाव्य में मानवीय मूल्यों का अन्वेषण विषय पर अध्ययन किया था। उन्होंने रामायण में प्रस्तुत विभिन्न पात्रों एवं घटनाओं के माध्यम से व्यक्त मानवीय मूल्यों का विश्लेषण किया था। अध्ययन में सत्य, कर्तव्य, त्याग, निष्ठा, करुणा, सम्मान तथा नैतिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया गया था। शोधकर्ताओं ने पाया था कि रामायण में मानवीय मूल्यों को केवल व्यक्तिगत आचरण

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

तक सीमित नहीं रखा गया था, बल्कि उन्हें पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों के साथ भी जोड़ा गया था। उन्होंने निष्कर्ष दिया था कि रामायण में प्रस्तुत मूल्य व्यक्ति के चरित्र–निर्माण तथा सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण नैतिक आधार प्रदान करते थे।

मैती एवं मेटे (2024) ने महाभारत और रामायण का भारतीय ज्ञान प्रणाली पर प्रभाव विषय पर अध्ययन किया था। उन्होंने दोनों महाकाव्यों के भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक चिंतन, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक विचारों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया था। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया था कि रामायण और महाभारत ने भारतीय समाज में धर्म, कर्तव्य, नैतिक आचरण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आदर्श जीवन से संबंधित विचारों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

फिगुएरोआ (2018) ने प्राचीन भारत में उत्तम जीवन एवं अवकाश की अवधारणाएँरू वाल्मीकि रामायण से प्राप्त प्रमाण विषय पर अध्ययन किया था। उन्होंने वाल्मीकि रामायण के आधार पर प्राचीन भारतीय जीवन–दृष्टि, सामाजिक व्यवहार तथा उत्तम जीवन की अवधारणा का विश्लेषण किया था। अध्ययन में उन्होंने यह स्पष्ट किया था कि रामायण में उत्तम जीवन की अवधारणा केवल भौतिक सुख–सुविधाओं पर आधारित नहीं थी, बल्कि नैतिक आचरण, सामाजिक संबंधों, कर्तव्य तथा संतुलित जीवन–दृष्टि से भी संबंधित थी। उन्होंने रामायण के विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से यह दर्शाया था कि व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित किया गया था।

3. शोध–पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति का है। इसमें मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन का प्रमुख आधार महर्षि वाल्मीकि की रामायण है। इसके अतिरिक्त रामायण, भारतीय संस्कृति, नैतिक दर्शन, सामाजिक मूल्यों और मानवीय संबंधों से संबंधित पुस्तकों तथा शोध–अध्ययनों का संदर्भ लिया गया है। अध्ययन में पाठ–विश्लेषण की सहायता से प्रमुख पात्रों और घटनाओं में व्यक्त सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की व्याख्या की गई है।

4. रामायण में पारिवारिक संबंध और नैतिक मूल्य

रामायण में परिवार को नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्वपूर्ण केंद्र माना गया है। दशरथ और राम का संबंध पितृ–पुत्र संबंधों में कर्तव्य और सम्मान को प्रदर्शित करता है। राम अपने पिता के वचन को सर्वोच्च महत्व देते हुए राज्य और सुख–सुविधाओं का त्याग करके वन जाने का निर्णय लेते हैं। यह प्रसंग व्यक्तिगत इच्छाओं और पारिवारिक दायित्व के बीच संघर्ष को प्रस्तुत करता है।

राम और भरत का संबंध भ्रातृप्रेम का महत्वपूर्ण उदाहरण है। भरत को राज्य प्राप्त होने की स्थिति में भी वे स्वयं को अयोध्या के वास्तविक शासक के रूप में स्थापित करने का प्रयास नहीं करते। राम के प्रति उनका

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

सम्मान और राज्य के प्रति उनका दृष्टिकोण सत्ता से अधिक संबंध और कर्तव्य को महत्व देता है। राम की पादुकाओं को सिंहासन पर स्थापित करना इस संबंध की सांस्कृतिक एवं नैतिक महत्ता को व्यक्त करता है।

राम और लक्ष्मण के संबंध में भ्रातृप्रेम के साथ सेवा और समर्पण का भाव दिखाई देता है। लक्ष्मण वनवास के दौरान राम और सीता के साथ रहते हैं तथा कठिन परिस्थितियों में उनका साथ देते हैं। उर्मिला का चरित्र भी त्याग के एक महत्वपूर्ण पक्ष को सामने लाता है। इसी प्रकार सीता का वन में राम के साथ जाना वैवाहिक संबंध, सहभागिता और समर्पण का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार रामायण में परिवार को केवल भावनात्मक संबंधों के रूप में नहीं, बल्कि कर्तव्य, उत्तरदायित्व, त्याग और परस्पर सम्मान से निर्मित संस्था के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

5. समाज और सामाजिक मूल्यों का चित्रण

रामायण में सामाजिक जीवन अनेक प्रकार के संबंधों और समुदायों के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। अयोध्या का राजपरिवार, वनवासी समुदाय, ऋषि–मुनि, निषादराज गुह, वानर समुदाय तथा अन्य पात्र सामाजिक जीवन की विविधता को सामने लाते हैं। इन संबंधों के माध्यम से सहयोग, मित्रता, सेवा और विश्वास जैसे मूल्य दिखाई देते हैं।

राम और निषादराज गुह का संबंध सामाजिक संपर्क और मित्रता की भावना को व्यक्त करता है। इसी प्रकार शबरी का प्रसंग भक्ति, आतिथ्य और सम्मान की भावना को सामने लाता है। राम और सुग्रीव के बीच स्थापित संबंध सहयोग और पारस्परिक विश्वास पर आधारित है। हनुमान का चरित्र सेवा, निष्ठा और समर्पण के मूल्यों का प्रमुख उदाहरण है।

रामायण का सामाजिक संसार केवल राजपरिवार तक सीमित नहीं है। विभिन्न सामाजिक समूहों के पात्र कथा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि सामाजिक जीवन सहयोग और पारस्परिक संबंधों के माध्यम से संचालित होता है। हालांकि आधुनिक दृष्टि से रामायण में वर्णित सामाजिक संरचनाओं का अध्ययन उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में किया जाना आवश्यक है।

6. मानवीय संबंधों में प्रेम, त्याग और निष्ठा

रामायण में मानवीय संबंधों का एक प्रमुख आधार प्रेम और निष्ठा है। राम–सीता का संबंध, राम–भरत का भ्रातृप्रेम, राम–लक्ष्मण का संबंध तथा राम–हनुमान की भक्ति और सेवा इसके विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करते हैं।

हनुमान का चरित्र विशेष रूप से सेवा और निष्ठा का प्रतीक बनकर सामने आता है। वे व्यक्तिगत स्वार्थ के बजाय राम के कार्य को प्राथमिकता देते हैं। सीता की खोज, समुद्र पार करना और लंका में प्रवेश करना उनके साहस तथा समर्पण को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार भरत का त्याग यह दिखाता है कि प्रेम और संबंध कभी–कभी व्यक्तिगत अधिकार से ऊपर रखे जा सकते हैं।

इन संबंधों में त्याग का अर्थ केवल भौतिक वस्तुओं का त्याग नहीं है। कई पात्र अपनी इच्छाओं, सुविधाओं

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

और व्यक्तिगत हितों को व्यापक कर्तव्य के लिए पीछे रखते हैं। इस प्रकार रामायण मानवीय संबंधों को नैतिक निर्णयों और सामाजिक उत्तरदायित्वों के साथ जोड़ती है।

7. निष्कर्ष

महर्षि वाल्मीकि की रामायण परिवार, समाज और मानवीय संबंधों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक चिंतन के अनेक आयामों को प्रस्तुत करती है। राम और दशरथ के संबंध में पुत्रधर्म एवं पितृसम्मान, राम और भरत के संबंध में भ्रातृप्रेम एवं त्याग, राम और लक्ष्मण के संबंध में सेवा एवं समर्पण तथा राम और हनुमान के संबंध में निष्ठा एवं भक्ति जैसे मूल्य दिखाई देते हैं। सामाजिक स्तर पर निषादराज गुह, शबरी, सुग्रीव और हनुमान जैसे पात्र सामाजिक सहयोग, मित्रता और सेवा के विभिन्न रूप प्रस्तुत करते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रामायण में मानवीय संबंधों को व्यक्तिगत भावनाओं के साथ–साथ कर्तव्य, मर्यादा और सामाजिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में देखा गया है। यद्यपि इन मूल्यों की व्याख्या उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में की जानी चाहिए, फिर भी सम्मान, सहयोग, निष्ठा, त्याग और उत्तरदायित्व जैसे व्यापक मानवीय मूल्य वर्तमान सामाजिक जीवन के अध्ययन में महत्वपूर्ण बने हुए हैं। इस दृष्टि से रामायण केवल एक धार्मिक या साहित्यिक आख्यान न होकर भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक चिंतन को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत है।

संदर्भ सूची

1. पटेल, पी., एवं चौहान, डी. (2025)। महाकाव्य रामायण में मानवीय मूल्यों का अन्वेषण। जर्नल ऑफ जनरल एजुकेशन एंड ह्यूमैनिटीज, 4(2), 299–308।
2. मैती, ए. के., एवं मेटे, जे. (2024)। महाभारत और रामायण का भारतीय ज्ञान प्रणाली पर प्रभाव।
3. फिगुएरोआ, ओ. (2018)। प्राचीन भारत में उत्तम जीवन एवं अवकाश की अवधारणाएँ वाल्मीकि रामायण से प्राप्त प्रमाण। हैंडबुक ऑफ लीजर, फिजिकल एक्टिविटी, स्पोर्ट्स, रिक्रिएशन एंड क्वालिटी ऑफ लाइफ, 259–271। चाम स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग।
4. फिगुएरोआ, ओ. (2018)। वाल्मीकि रामायण से प्राप्त जीवन–दृष्टि संबंधी प्रमाण। हैंडबुक ऑफ लीजर, फिजिकल एक्टिविटी, स्पोर्ट्स, रिक्रिएशन एंड क्वालिटी ऑफ लाइफ, 259।
5. सक्सेना, एस., राजू, एस. एस., एवं धाकड़, एम. के. (2025, नवंबर)। नैतिकता और सदाचार के निर्माण में वेदों एवं पुराणों की भूमिका समकालीन नैतिक रूपरेखाओं के साथ एक तुलनात्मक अध्ययन। तृतीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, अनुभूति आधुनिक विश्व के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों का पुनरोद्धार (ICIKS 2025), 306–325। अटलांटिस प्रेस।
6. महर्धिका, जे. (2026)। ऊपर से निर्धारित नैतिकता महाभारत और रामायण में जनसाधारण, धर्म और सत्ता।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

7. संतवानी, एस. (2019)। अतिक्रमण बनाम अतिक्रमण से परे भारतीय महाकाव्यों रामायण और महाभारत में स्त्री–यौनिकता की गतिशीलता का विश्लेषण। 54।
8. वारियर, एस. (2026)। लैंगिक आधार पर बलि का बकरा बनाना वाल्मीकि रामायण में पवित्र शुद्धीकरण के रूप में महिलाओं का सामाजिक बहिष्कार। इवॉल्विंग जेंडर्स द डायनेमिक्स ऑफ नैरेटिव बेंचमार्किंग इन एशियन लिटरेचर, 149–164। सिंगापुर स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर।
9. ओलिवेरा, जे. पी. (2024)। भारतीय विशेषताओं वाला समाज रामायण के समकालीन पुनर्कथनों में जाति, वर्ग और प्रजाति। जर्नल ऑफ धर्मा स्टडीज, 1–19।
10. शाह, आर., एवं शाह, एम. (2021)। रामायण के समय में नैतिकता और शासन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिलीजियस एंड कल्चरल स्टडीज, 3(1)।

AUTHOR'S DECLARATION

I/We, as an author/authors of the above paper/article, hereby declare that the content of this paper is prepared by me/us for publication in this journal is completely my/our own genuine paper and if any person having copyright issue or patent or anything related to the content, I/we shall always be legally responsible for any issue. If any data or information given by me/us is not correct, I/we shall always be legally responsible. With my/our whole responsibility legally and formally have intimated the publisher that the paper has been checked by guide or expert or supervisor to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism. If any issue arises related to plagiarism or any issues, I/we will be solely/entirely responsible for any legal disputes or legal issues. I/we declared that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my/our paper may be removed from the website. I/we also aware that the publication fees is not refunded further in any circumstances. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me/us. I/we also declared that this journal/publisher will not be held responsible any legal issues in future regarding this paper publication in this journal.

Monalisa Saha

Dr. Sapna Narayan